शोध मंथन, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
UGC Aproved Journal No. 40908

(साहित्य) कला संकाय के शोधपत्र के प्रकार

शगुन सिक्का
असि0 प्रोफे0,श्री गुरूतेग बहादुर खालसा कालिज, श्री आन्नदपुर साहिब

सारांश

मानव की जानने की आन्तरिक जिज्ञासा सदा से ही अनुसंधान का कारण बनती रहती है। जबसे मनुष्य ने चेतना पाई है, तब से ही अनुमान और खोज दो ऐसे तत्व उसके मस्तिष्क में विद्यमान हैं, जो उसके लिए निरन्तर नवीनता के अन्वेशण का आधार बने हैं। शोध, खोज, अनुसंधान, अन्वेषण, गवेषणा सभी हिन्दी में पर्यायवाची शब्द हैं। इसी को मराठी में संशोधन और अंग्रेजी में रिसर्च कहते हैं। खोज में सर्वथा नूतन सृष्टि का नहीं, अज्ञात को प्राप्त करने का ही भाव है। मनुष्य बुद्धिसम्पन्न प्राणी होने के कारण अपनी सचेतावस्था से ही जिज्ञासु रहा है।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

शगुन सिक्का,
''(साहित्य) कला संकाय के शोधपत्र के प्रकार'',
शोध मंथन, जून 2017,
पेज सं0 113–117
http://anubooks.com/?page_id=2030
Artcile No.19(SM426)

प्रोफे0 शगुन सिक्का

प्रस्तावना

शोध पत्र क्या है ?

शोध इस शब्द की उत्पत्ति 'शुध' धातु में 'धज़' प्रत्यय लगाकर हुई है। इसका सामान्य अर्थ शुद्ध करना या शुद्ध होना ठहरता है। शुद्धि, शोधन, संस्कार, संशोधन, समाधान, शुद्धिकरण, सुधार आदि अन्य अनेक अर्थ इसके साथ जोड़े गए हैं। भारतीय मनीशा का मत है कि 'शोध' से जो विस्तृत और व्यापक अर्थ बोध होता है, वह रिसर्च में भी समाहित नहीं हो सकता। सच तो यह है कि अज्ञात को ज्ञात बनाने, उनकी प्रमाणिकता का अध्ययन करने, निष्कर्षों को पाने या समार्थ्य तथा परिणामों या निरीक्षण–परीक्षण, सब शोध के अन्तर्गत स्वीकार्य हैं। इस शब्द की विशेषता यह है, कि इसमें अतिरिक्त परिष्कार को भी इसमें शामिल करके शब्द का गौरव बढ़ाया जा सकता है। अंग्रेजी के दो शब्द– डिस्कवरी और रिसर्च। डिस्कवरी वाला भाव बोध में नहीं सिमटता, क्योंकि इसमें व्याख्या निहित रहती है, तथापि रिसर्च से सम्बन्धित समस्त क्रियाओं को 'शोध' विशिष्टता क्षमता के साथ वहन करता है। ज्ञान के क्षेत्र में शोध का कोर्य निरन्तर जारी रहता है। प्राचीन काल से ही शोध होता रहा है। प्रत्येक युग में नए तथ्य, नए विचार आविष्कृत हुए हों, यह बात नहीं है, परन्तु पुराने विचारों को नवीन रूप देने की क्रिया निश्चय होती रही है। ज्ञात तथ्य की युगानुरूप व्याख्या भी शोध का अंग माना जाता है।

भारत के नाट्यशास्त्र में रसनिष्पित्ति के सूत्र ''विभानुभावव्यभिचारिसंयोगात् रसनिष्पत्ति'' की व्याख्या करने में उनके परवर्ती आचार्यों ने जो श्रम किया उसकी मीमांसा, न्याय तथा सांख्य आदि से प्रभावित जो व्याख्या की, वह क्या शोधपत्र का अंग नहीं है ? ऐसे अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं जिनमें आचार्यों ने अपने पूवर्नवर्ती आचार्यों के ज्ञान में नया अर्थ भरकर उसे युगानुरूप बनाने का प्रयत्न किया है।

शोधपत्र के प्रकार :

कला सम्बन्धी शोधपत्र कई प्रकार से राजनीतिक, सामाजिक तत्वों का बीनना भी कलात्मक शोध है और रचना के ऐतिहासिक राजनीतिक, सामाजिक, अध्ययन को भी कलात्मकता की परिधि में रखा जा सकता है। शोध पत्र में शोधार्थी अपने चिन्तम मनन को नवीन व्याख्याओं द्वारा न केवल अभिव्यक्ति देता है, बल्कि धारा विशेष के सम्बन्ध में विश्लेषण, संश्लेषण और निर्णय भी प्रस्तुत करता है। शोध पत्र के प्रकार इस प्रकार हैं :–

1. काल की दृष्टि से शोध पत्र इस प्रकार विभाजित होंगे

i) ऐतिहासिक शोध में मानव के विविध दिशाओं जैसे साहित्य, संस्कृति, भाषा, विज्ञान आदि में होने वाले भूतकालिक प्रयत्नों, कार्यों का वैज्ञानिक पद्धति से शोध पत्र लिखना। अतीत को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समझाना।

ii) वर्णनात्मक शोध पत्र में मानवजीवन की सभी वर्तमान समस्याओं पर, साहित्य, समाज विज्ञान, शुद्ध विज्ञान से सम्बन्ध रखती हो पर भी शोध पत्र लिखे जा सकते हैं। इसे कोई 'व्याख्यात्मक शोध', 'सर्वे–शोध' भी कहते हैं।

iii) सर्वेक्षण शोध पत्र विशेषकर समाज के विशयों पर लिखा जाता है। इस प्रणाली के अन्तर्गत, शैक्षणीय, समाजशास्त्रीय, अर्थशास्त्रीय, भाषा–विज्ञानीय आदि सर्वेक्षण होते हैं।

2. उद्देश्य की दृष्टि से शोध पत्र दो प्रकार के हो सकते हें :–

एक प्रकार वह जिसका उद्देश्य केवल वैज्ञानिक पद्धति से अनुमानित परिकल्पना के आधार पर किसी तथ्य या सिद्धान्त को शोध पत्र लिखना हो, इसे शुद्ध शोध भी कहते हैं। दूसरा प्रकार वह है जिसका उद्देश्य शुद्ध शोध पत्र के परिणाम को व्यवहारिक बनाने की दिशा में प्रयत्न करना होता है, इसे व्यवहारिक या कार्यशील शोध पत्र लेखन भी कहते हैं।

3. प्रयोगात्मक शोध पत्र लेखन में हम सावधानीपूर्वक नियंत्रण परिस्थिति में किसी समस्या का क्या परिणाम निकलेगा, यह ज्ञात होता है। यह विज्ञान की प्रयोगषाला की प्राचीन पद्धति है। यह शोध पत्र लिखने काफी जटिल होते हैं।

अब हम साहित्यिक शोध पत्र के विभिन्न प्रकारों का अध्ययन करेंगे। मानव के पास आजतक के संचित ज्ञान को रागात्मक, बौद्धिक आर पौराणिक खण्डों में विभाजित किया जा सकता है। इन्हीं के क्षेत्रों में शोधार्थी के लिए शोध पत्र लिखना भी सम्भव है और वह रागात्मक साहित्य सम्बन्धी, बौद्धिक साहित्य सम्बन्धी और पौराणिक साहित्य सम्बन्धी भी शोध पत्र लिख सकता है। इस रागात्मक परिधि के अनुसंधान को हम शोधपत्र द्वारा लिखित रूप देते हैं। शुद्ध रागात्मक साहित्य सम्बन्धी अनुसंधान के अलग–अलग धरातल और अलग–अलग तात्विक विषय हो सकते हैं। साहित्य के शोध पत्र लिखते समय तीन तत्वों का ध्यान रखना चाहिए :

i) भाव तत्व
ii) कल्पना और शैली तत्व
iii) बुद्धि तत्व

भावतत्व सम्बन्धी शोध पत्र :

प्रत्येक रागात्मक रचना वह काव्य, उपन्यास, नाटक, कहानी कुछ भी हो सकती है, विशेष भाव जगत की उपज होती है। ऐसे ही तत्वों में शोधार्थी किसी कृति विशेष अथवा धारा का पहला शोधपूर्ण अध्ययन करता है, फिर भाव तत्व से साहित्यिक शोध करने के बाद शोध पत्र लिखता है। 'तुलसी के काव्य में लोकमंगल' 'सूर काव्य में वात्सलय चित्रण' 'रीतिमुक्त धारा में विप्रलम्भ श्रृंगार' आदि भावात्मक विषय हैं, जिन पर शोधपत्र लिखे जा सकते हैं। राष्ट्रीयभावना, प्रेमभावना, विद्रोह भावना, भक्तिभावना, संघर्ष भावना आदि तत्वों का अध्ययन करके उन पर शोधपत्र लिखे जा सकते हैं।

कल्पनातत्व सम्बन्धी साहित्यिक शोध पत्र :

साहित्य में भाव तत्व के साथ–साथ कल्पना तत्व भी अहम रोल अदा करता है, जिस पर शोधपत्र लिखे जा सकते हैं। यह अनिवार्य नहीं कि विषय वस्तु कल्पना के द्वारा किसी

अस्तित्व में से निकाली जाए। अस्तित्व में रहती हुई कोई घटना कल्पना का आश्रय पाकर एक नवीन वेष धारण कर लेती है और किसी भी सुन्दर काव्य कृति की विषय वस्तु बन जाती है। विषय वस्तु से सम्बद्ध साहित्यिक शोध पत्र की परिधि वर्ण्य विषय के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक अथवा मनौवैज्ञानिक आधारों के अध्ययन तक व्यापक होती है। इस क्षेत्र की कोई भी सफल शोध कृति, शोध पत्र शोधार्थी के साहित्यिक ज्ञान की भी परिचायक होती है।

विचार, तत्व सम्बन्धी साहित्यिक शोध पत्र :

रागात्मक साहित्य में अनेक शास्त्र जन्य तत्व भी विद्यमान होते हैं। इन्हीं शास्त्र जन्य तथ्यों को आधार बनाकर शोध पत्र की प्रक्रिया विचार तत्व सम्बन्धी शोध कहलाती है। विज्ञान, दर्शन, धर्मशास्त्र, समाजशास्त्र, काव्याशास्त्र, संस्कृति अथवा मनोवैज्ञानिक की पृष्ठभूमियों पर रचना सम्बन्धी गठन का अध्ययन इसी कोटि के अन्तर्गत आता है। इस शोधपत्र में रचयिता के वैचारिक धरातल अथवा बौद्धिक स्तर का शास्त्रीय विवेचन किया जाता है।

शैली तत्व साहित्यिक शोध पत्र :

साहित्यिक रचना का यह चौथा तत्व है, जिसमें प्रवृत्ति तथा अभिव्यंजना कला की परख की जाती है। शैलीगत अध्ययन करने वाले अनुसन्धित्सुओं की पकड़ वादों, प्रवृत्ति जन्य चित्रणों और भावात्मक निरूपरों के घेरे में रहती है।

इस प्रकार एक शोधार्थी के पास काफी सम्बन्धित विषय तत्व होते हैं। शोधपत्र लिखने के लिए कभी–कभी शोधार्थी कृतियों से सम्बन्धित भाषा अथवा मूल भाषा के अध्ययन को ही शोध पत्र का हिस्सा बना लेता है। भाषा की अभिव्यंजना शक्ति, व्याकरण, सांस्कृतिक देन अथवा भाषा वैज्ञानिक अर्थ परिवर्तन आदि को विषय बनाकर शोध पत्र लिखते हैं।

साहित्य के क्षेत्र में भी हम शोध पत्रों के प्रकार जान चुके हैं। साहित्य शोधपत्र के दो मूल पहलू हैं, जिन्हें आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी के शब्दों में स्थूल और सूक्ष्म अंगो में विभाजित किया जा सकता है।

चार स्थल अर्थों में वह नवीन और विस्तृत तत्वों का अनुसंधान है, जिसको अंग्रेजी में Discovery of Facts कहते हैं और सूक्ष्म अर्थ में वह ज्ञात साहित्य के पुनर्मूल्यांकन और नयी व्याख्याओं का सूचक है।

यह भी एक जटिल प्रक्रिया है। साहित्यिक शोधपत्र मूलतः रागात्मक साहित्य की शुद्ध प्रक्रिया होती है। शुद्ध साहित्यिक शोध पत्र का घेरा केवल रचना की भावभूमि, संरचनात्मकता, अभिव्यंजना शिल्प तथा कलात्मक सौंदर्य तक ही सीमित नहीं होता। शोधपत्र के माध्यम से नवागुन्तक शोधर्थियों को अपनी योग्यता प्रदर्शित करने का मौका मिलता है।

i) साहित्यिक शोधपत्र।

ii) भाशा वैज्ञानिक शोधपत्र।

iii) काव्यषास्त्रीय शोधपत्र।

iv) साहित्येतिहास सम्बन्ध शोधपत्र।

v) तुनलात्मक साहित्यिक शोधपत्र।

vi) लोकसाहित्य शोधपत्र।

vii)साहित्य की समाजशास्त्रीय शोधपत्र।

viii)साहित्य के मनोवैज्ञानिक शोधपत्र।

ix) साहित्य की सौन्दर्यशास्त्रीय शोधपत्र।

x) साहित्य की ऐतिहासिक शोधपत्र।

साहित्य के शोधपत्र इस प्रकार बहुत प्रकार के हैं और अधिक भी हो सकते हैं। कोई भी साहित्यिक शोधार्थी का विषय बन सकता है। इन्हीं शोधपत्र के कारण आज का मनुष्य जब नवीन अनुसंधान की ओर बढ़ता है तो उसके क्षेत्रों की अनेकता प्रायः उसके शोधकार्य की विभिन्नता प्रकट करती है और विभिन्नता अनुसंधान के अलग–अलग प्रकारों की प्रतिष्ठा करती है। इस विभिन्न प्रकारों का वर्गीकरण सामान्यतः हम उद्देश्य, कला और प्रयोग की दृष्टियों से कर सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ

i) John W. Best – Research in Education

ii) डॉ. सत्येन्द्र – अनुसंधान

iii) डॉ. विनयमोहन शर्मा – शोध प्रविधि

iv) डॉ. मनमोहन सहगल– हिन्दी शोध तन्त्र की रूपरेखा

v) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी – शोध सामग्री